आर्थिक स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर के सिद्धांत

द्वारा: पास्टर ब्राइन क्लुथ

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर पवित्र शास्त्र इन विषयों पर कितनी बार बात करता है?

बपतिस्मा? ४० पद प्रार्थना? २७५ पद विश्वास? ३५० पद प्रेम? ६५० पद धन/भौतिक वस्तुएं/सम्पति? २,३५० पद

आर्थिक स्वतंत्रता के विषय में आप की परिभाषा .....

आर्थिक स्वतंत्रता की नई परिभाषा: *अपने जीवन को परमेश्वर के अर्थिक सिद्धांतो पर बनना ताकि आप परमेश्वर पर मार्ग दर्शन और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विश्वास कर सकें।*

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
१- इस में परमेश्वर का कोई हाथ नही है	**आप के आत्मिक जीवन के लिए आवश्यक है**
लूका १६:११ *इसलिए जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा?* **लूका १२:३४** *क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।* **प्रकाशितवाक्य ३:१७-१८** *तू जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नही, और यह नही जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अंधा, और नंगा है।*	
२- जो कुछ मेरे पास है वह मेरा है	**जो कुछ मेरे पास है वह परमेश्वर का है**
व्यवस्था विवरण ८:१७,१८ *और कहीं ऐसा न हो की तू सोचने लगे, कि यह संपत्ति मेरे ही सामर्थ और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। परंतु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे संपत्ति प्राप्त करने का सामर्थ इसलिए देता है, कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खा कर बांधी थी उस को पूरा करे, जैसा आज प्रकट है।* **भजन सहिंता ६२:१०** *चाहे धन संपत्ति बढे, तौभी उस पर मन न लगाना।* **भजन सहिंता २४:१** *पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करने वाले भी।* **कुलुस्सियों १:१७** *और वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।* **देखें १ इतिहास २९:११, भजन सहिंता ५०:१२, १ कुरिन्थियों १०:२**	
३- मुझे और अधिक पैसे की आवश्यकता है	**मेरे पास जो है उसी का उचित प्रबंध**
सभोपदेशक ५:११ *जब संपत्ति बढती है, तो उस के खाने वाले भी बढते हैं, तब उस के स्वामी को इस के छोड और क्या लाभ होता है कि उस संपत्ति को अपनी आखों से देखे।* **लूका १६:१०** *जो थोडे से थोडे में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोडे से थोडे में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।* **भजन सहिंता ३७:१६** *धर्मी का थोडा सा माल दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।*	
४- भोग विलास के लिए जीवन जीना	**स्व-नियंत्रित जीवन जीना**
नीतिवचन २१:१७ *जो रागरंग से प्रीति रखता है वह कंगाल होता है।* **नीतिवचन २३:१९** *दाखमधु के पीने वालों में न होना, न मांस के अधिक खाने वाले की संगति करना, क्योंके पियक्कड और खाऊ अपना भाग खोते हैं।* **लूका १५:१३-१४** *छुटका पुत्र दूर देश चला गया...और कुकर्म में अपनी संपत्ति उडा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका तो... वह कंगाल हो गया।* **तीतुस २:११-१२** *परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट है जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है और हमें चिताता है कि हम अभक्ति और संसारीक अभिलाषाओं से मन फेर कर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।*	
मनुष्यों के मार्ग	**परमेश्वर का मार्ग**
५- पैसे से प्रेम	**परमेश्वर से प्रेम**
लूका १६:१३ *कोई दास दो स्वामीयों की सेवा नही कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नही कर सकते।* **सभोपदेशक ५:१०** *जो रुपये से प्रीति रखता है वह रुपये से तृप्त न होगा।* **१ तीमु. ६:१०** *रुपये का लोभ सब बुराईयों की जड है जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हूए कितनों ने विश्वास से भटक कर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया।*	
६- सब खर्च कर दो	**भविष्य के लिए जमा करो**

नीतिवचन २१:२० *बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं परंतु मूर्ख उन को उडा डालता है।* **नीतिवचन २२:३** *चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देख कर छिप जाता है परंतु भोले लोग आगे बढ कर दंड भोगते हैं।* **सभोपदेशक ५:११** *जब संपत्ति बढती है तो उस के खाने वाले भी बढते हैं।*

७- खोने का या कठिन समय का भय	आवश्यकता पूर्ति के लिए परमेश्वर पर विश्वास

भजन ३७:१८-१९ *यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधी रखता है और उनका भाग सदैव बना रहेगा। विपत्ति के समय उन की आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होगें।* **भजन ३३:१८-१९** *देखो यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर और उन पर जो उनकी करुणा की आशा रखते हैं, बनी रहती है, कि वह उन के प्राण को मृत्यु से बचाए।* **रोमियों ८:३५** *कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट या ...अकाल?* **उत्पत्ति १२:१० इब्राहिम उत्पत्ति २६:१ इसहाक उत्पत्ति ४१:२९, ३०, ५० युसुफ उत्पत्ति ४२:२ याकूब रुत १:१-४ रुत २ शमु. २१:१ दाऊद १ राजा १८:२ एलिय्याह २राजा ४:३८ एलीशा नहेमायाह ५:३ नहेमायाह यिर्म. ५२:६ यिर्मयाह प्रेरितों के काम ११:२८ को भी देखें।**

८- दूसरों से जलन रखना	संतुष्ट रहना

भजन ७३:२-२८ *मेरे डग तो उखडना चाहते थे... जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था... उन का धन बढता रहता है।* **इब्रानीयों १३:५-६** *तुम्हारा स्वभाव लोभ रहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर संतोष करों। क्योंकि उस ने आप ही कहा है मैं तुझे कभी न छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा।* **१ तीमु. ६:६** *संतोष सहित भक्ति बडी कमाई है।* **फिल. ४:११, १२ नीतिवचन २३:१७ १ पतरस २:१-२ भी देखें**

९- पडोसीयों की बाराबरी करना	परमेश्वर द्वारा चिंता का अनुभव करना

निर्गमन २०:१७ *तू किसी के घर का लालच न करना, न तो किसी की किसी वस्तु का लालच करना।* **सभोपदेशक २:२६** *पापी को वह दुख भरा काम ही देता है कि वह उन को देने के लिए संचय करके ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो।* **नीतिवचन १३:२२** *पापी की संपत्ति धर्मी के लिए रखी जाती है।* **भजन १०५:४४** *वह (परमेश्वर के लोग) और लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किए गए।* **अयूब २७:१६-१७** *पापी चाहे रुपया धूली के समान बटोर रखे और वस्त्र मिटटी के किनको के तुल्य अनगिनत तैयार कराए, वह उन्हे तैयार कराए तो सही परंतु धर्मी उन्हे पहन लेगा।.* **यशा. ४५:३ नीतिवचन २८: ८ भजन ३९:५ यशा. २३:१८ व्य. वि. ६:१०-१२ यहोशू ११:१४, २४:१३ नहे. ९:२५**

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग

१०- पैसे के विषय में वाद विवाद करना	प्रार्थना में एक मन होना

नीतिवचन १५:१६-१७ *घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से यहोवा के भय के साथ थोडा ही धन उत्तम है। प्रेम वाले घर में सागपात का भोजन बैर वाले घर में पले हुए बैल का मांस खाने से उत्तम है।* **१ पतरस ३:७** *हे पतीयों तुम भी बुद्धिमानी से पत्नीयों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जान कर उस का आदर करो, यह समझ कर की हम दोनो जीवन के वरदान के वारीस है जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं।* **भजन ३४:१७** *धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन को सब विपत्तियों से छुडाता है।* **यशायाह ५९:२** *तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नही सुनता।* **रोमियों १०:१३** *जो कोई प्रभु का नाम लेता है वह उद्धार पाएगा।*

११- तुरंत धनवान बनने की इच्छा- जुआ खेलना और बुरी योजना बनना	धीरज रखना और मेहनत करना

नीतिवचन २२:२६ *जो लोग हाथ पर हाथ मारते और ऋणियों के उत्तरदायी होते है, उन में तू न होना।* **नीतिवचन १३:११** *निर्धन के पास माल नही रहता, परंतु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढती होती है।* **नीतिवचन २८:१९** *जो अपनी भूमि को जोता-बोया करता है, उसका पेट तो भरता है, परंतू जो निकम्मे लोगों की संगती करता है वह कंगालपन से घिरा रहता है।* **नीतिवचन २८:२०** *...जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नही ठहरता।* **नीतिवचन २०:२१** *जो भाग पहिले उतावली से मिलता है, अन्त में उस पर आशीष नही होती।* **नीतिवचन २८:२२** *लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नही जानता कि वह घटी में पडेगा।.* **१ तीमु. ६:९** *जो धनी होना चाहते हैं वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते है जो मनुष्य को बिगाड देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबो देती हैं।*

१२- भर लेने का रोग	इकट्ठा न करना

लूका १२:१५ *''चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नही होता।''* **मत्ती ६:१९-२१** *''अपने लिए पृथ्वी पर धन इक्टठा न करो, जहां कीडा और काई बिगाडते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।''*

१३- अच्छा घर	अच्छा परिवार

नीतिवचन १४:११ *दुष्टों का घर विनाश हो जाता है, परंतु सीधे लोगों के तम्बू में आबादी होती है।* **यशा. ३२:१८** *मेरे लोग शांति के स्थानों में निश्चिन्त रहेगें, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेगें।***भजन १२८:३** *तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी, तेरी मेज के चारो और तेरे बालक जलपाई के पौधे से होगें।*

१४- कर्ज में डुब जाना	कर्ज से दूर रहना या उस से छुटकारा पाना

नीतिवचन १७:१८ *निर्बुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता है, और अपने पडोसी के सामने उत्तरदायी होता है।* **नीतिवचन २२:७** *धनी, निर्धन पर प्रभुता करता है। २राजा ४:११, व्य. वि. २८:४३-४४ भी देखें* **रामियों १३:८** *आपस में प्रेम को छोड और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो।* **व्य. वि. २८:१२** *यहोवा तेरे लिए अपने आकाशरूपी उत्तम भंडार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा, और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परंतु किसी से तुझे उधार लेना न पडेगा।* **भजन ३७:२१** *दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नही।* **नीतिवचन २२:२७** *यदी भर देने के लिए तेरे पास कुछ न हो, तो वह क्यों तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?*

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
१५- पैसे पर अपनी आशा रखना	परमेश्वर पर अपनी आशा रखना

१ तीमु. ६:१७ *इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वह अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परंतु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।* **प्रका. वाक्य ३:१७-१८** *(यीशु ने कहा) "तू जो कहता है कि मैं धनी हूँ और धनवान हो गया हूँ और मुझे किसी वस्तु की घटी नही, और यह नही जानता कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा और नंगा है...मुझ से मोल ले, कि धनी हो जाए और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिन कर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो।"*

१६- दान न देने के लिए बहाने बनाना	सर्वप्रथम परमेश्वर को देना

१ राजा १७:१३-१६ *एलियाह ने उस से कहा (विधवा से)"मत डर...पहिले मेरे लिए एक छोटी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इस के बाद अपने और अपने बेटे के लिए बनाना। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, 'कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घडे का मैदा चुकेगा और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।' तब वह चली गई और एलियाह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उस का घराना बहुत दिनो तक खाते रहे।* **उत्पत्ति २८:२०-२२** *और याकूब ने यह मन्नत मानी, "यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे...तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा.और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा।"* **व्य.वि. १४:२३** *दशमांश देने का उददेश्य यह है कि तुम परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान दो।*

१७- कंजूसी से देना	विश्वास योग्यता से देना

हाग्गै १:५-१२ *"अपनी अपनी चालचलन पर ध्यान करो...तुम ने बहुत उपजकी आशा रखी, परंतु देखो थोडी ही है, और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैने उसे उडा दिया।" सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, "ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिए नही, कि मेरा भवन उजाड पडा है और तुम मे से प्रत्येक अपने अपने घर दौडा चला जाता है?"* **मलाकी ३:१०** *सारे दशमांश भंडार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे, और सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो के मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नही।"*

१८- हिचकिचाहट से देना	हर्ष से देना

२ कुरि. ९:७ *हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुढ कुढ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।* **२ कुरि. ८:१२** *क्योंकि यहद मन कि तैयारी हो तो दान उस के अनुसार ग्रहण भी होता है जो उस के पास है न की उस के अनुसार जो उसके पास नही।*

१९- बचा हुआ देना	संतुलित दान देना

२ कुरि. ८:७ *सो जैसे हर बात में...वेसे ही इस दान के काम में भी बढते जाओ।* **व्य. वि. १६:१६-१७** *.और देखो, छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न जाए, सब पुरुष अपनी अपनी पूंजी, और उस आशिष के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दि हो दिया करें।* **१ कुरि. १६:२** *सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार अपने पास कुछ रख छोडे, कि मेरे अपने पर चन्दा न करना पडे।*

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
२०- आज के लिए जीना	अनन्त काल के लिए दान देना

लूका १२:१६-२१ *किसी धनवान की भूमि में बहुत उपज हुई...तब वह अपने मन में विचार करने लगा...मैं अपनी बखारियां तोड कर उन से वडी बनाऊंगा...परंतु परमेश्वर ने उस से कहा, "हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तब जो कुछ तू ने इकटठा किया है वह किस का होगा? ऐसा ही वह मनुष्य है जो अपने लिए धन बटोरता है परंतु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नही*

२१- अपनी आर्थिक स्थिति से अनभिज्ञ	अपनी आर्थिक स्थिति का पूरा ज्ञान

नीतिवचन २७:२३-२४ *अपनी भेड बकरियों की दशा भली भांति मन लगा कर जान ले और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर, क्योंकि सम्पत्ति सदा नही ठहरती, और क्या राजमुकुट पीढी-पीढी चला जाता है?* **हाग्गै १:५-७** *सेनाओं का यहोवा यों कहता है, "अपनी अपनी चालचलन पर ध्यान करो। तुम*

ने बहुत बोया परंतु थोडा काटा, तुम खाते हो परंतु पेट नही भरता, तुम पीते हो परंतु प्यास नही बुझती, तुम कपडे पहिनते हो परंतु गरमाते नही, और जो मजदूरी कमाता है वह अपन मजदूरी की कमाई को छेदवाली थैली में रखता है।''

२२- परमेश्वर न तो मेरे दान देने को जानता है और न ही उसे इस की चिंता है	परमेश्वर मेरे दान देने को देखता है

लूका २१:१-४ *फिर उस ने (यीशु ने) आखं उठाकर धनवानों को अपना अपना दान भंडार में डालते देखा। और उस ने एक कंगाल विधवा को भी उस में दो दमडियां डालते देखा। तब उस ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सब से बढकर डाला है क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढती में से दान में कुछ डाला है परंतु इस ने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।* **एज्रा २:६८-६९** *पितरों के घरानों के कुछ मुख्य मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के भवन को जो यरूशलेम में है, आए, तब परमेश्वर के भवन को उसी के स्थान पर खडा करने के लिए अपनी अपनी इच्छा से कुछ दिया। उन्होने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार ६१००० दर्कमोन सोना और ५००० माने चांदी...अपनी अपनी इच्छा से उस काम के खजाने में दे दिए।* **२ कुरि. ९:३** *उन्होने अपनी योग्यता के अनुसार दिया बरन अपनी योग्यता से भी अधिक दिया है।*

२३- लेने वाले हाथ और कुडकुडाने वाला हृदय	उदार हाथ और धन्यवादी हृदय

२ कुरि. ८:७ *सो जैसे हर बात में...वेसे ही इस दान के काम में भी बढते जाओ।* **नीतिवचन ११:२४** *ऐसे है जो छितरा देते है, तौभी उनकी बढती होती है, और ऐसे भी हैं जो यर्थाथ से कम देते है और इससे उनकी घटती ही होती है।* **नीतिवचन ३१:२०** *वह (धर्मी महिला) दीन के लिए मुटठी खोली है और दरिद्र के संभालने के लिए हाथ बढाती है।* **नीतिवचन २८:२७** *जो निर्धन करे दान देता है उसे घटी नही होती, परंतु जो उस से दृष्टि फेर लेता है वह शाप पर शाप पाता है।*
नीतिवचन १९:१७ *जो कंगाल पर अनुग्रह करता है वह यहोवा को उधार देता है और वह अपने काम का प्रतिफल पाएगा।* **निर्गमन ३५:४-५** *...जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है- तुम्हारे पास यहोवा के लिए भेंट ली जाए, अर्थात जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएं ले आएं, अर्थात सोनाख रुपा और पीतल...।*

२४- मृत्यु की वास्तविकता को नजर आंदाज करना	परीवार का अच्छा प्रबंध करना

२ राजा २०:१ *''यहोवा यों कहता है, 'अपने घराने के विषय में जो आज्ञा देनी हो वह दे क्योंकि तू नही बचेगा, मर जाएगा।''* **१ तीमु. ५:८** *यदि कोई अपनो की और निज करके अपने घराने कर चिन्ता न करे जो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।*

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
२५- सह- हस्ताक्षर	सह- हस्ताक्षर से बचना

नीतिवचन १७:१८ *निबुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता है और अपने पडोसी के सामने उत्तरदायी होता है।* **नीतिवचन ११:१५** *जो परदेशी का उत्तरदायी होता है वह बडा दुख उठाता है।* **नीतिवचन २२:२७** *यदि भर देने के लिए तेरे पास कुछ न हो तो वह क्यों तेरे नीचे ये खाट खींच ले जाए?* **नीतिवचन ६:१-५** *हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पडोसी का उत्तरदायी हुआ हो, अथवा परदेशी के लिए हाथ पर हाथ मार कर उत्तरदायी हुआ हो तो तू अपने मुंह के वचनो से फंसा, और अपने ही मुंह की बात से पकडा गया। इसलिए हे मेरे पुत्र, एक काम कर, अर्थात तू अपने पडोसी के हाथ में पड चुका है, तो जाकर उसको साष्टांग प्रणाम करके मना ले। तू न तो अपनी आंखों में नींद और न अपनी पलकों में झपकी अपने दे, और अपने आप को हरिणी के समान शिकारी के हाथ से और चिडिया के समान चिडिमार के हाथ से छुडा।*

२६- झुठ बोलना, धोखा देना, प्रतिज्ञा तोडना	इमानदारी, सच्चाई, प्रतिज्ञा पूरी करना

नीतिवचन २१:६ *जो धन झूठ सो प्राप्त होता हो, वह वायु से उड जाने वाला कुहरा है, उस के ढूंढनेवाले मृत्यु ही को ढूंढते हैं।* **नीतिवचन १२:२२** *झूठो से यहोवा को घृणा आती है, परंतु जो विश्वास से काम करता है, उन से वह प्रसन्न होता है।* **नीतिवचन १२:१९-२०** *सच्चाई सदा बनी रहती है परंतु झूठ पल भर का होता है। बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है परंतु मेल की युक्ति करनेवालों को आनंद होता है।* **नीतिवचन ६:१२-१५** *ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढी टेढी बातें बकता फिरता है, वह नैन से सैन और पांव से इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है, उस के मन में उलटफेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढता है और झगडा-रगडा उत्पन्न करता है। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पडेगी, वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा।*
भजन ५:६, नीतिवचन ६:१६-१७, प्र. वा. २१:८

२७- घूस और भ्रष्टाचार	परमेश्वर का भय और आदर

निर्गमन १८:२१ *फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छांट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ से घृणा करने वाले हों।*
१ पतरस २:१७ *सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।* **व्य. वि. १०:१७-१८** *तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरो का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है, वह महान पराक्रमी और भय योग्य ईश्वर है जो किसी का पक्ष नही करता और न घूस लेता है। वह अनाथों और विधवा का न्याय चुकाता और परदेशीशें से ऐसा प्रेम करता है कि उन्हें भोजन और वस्त्र देता है।* **१ शमु. ८:१-३** *जब शमूएल बुढा हुआ तब उस ने अपने पुत्रों को इस्त्राएल पपर न्यायी ठहराया...परंतु उस के पुत्र उसकी राह पर न चले अर्थात लालच में आकर घूस लेते और न्याय बिगाडते थे।* **अय्यूब १५:३४** *...जो घूस लेते हैं, उनके तम्बू आग से जल जाएंगे।* **नीतिवचन १५:२७** *लालची अपने घराने को दुख देता है, परंतु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है।* **नीतिवचन २९:४** *राजा न्याय से देश को*

स्थिर करता है, परंतु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है। **यशा. १:२३-२४** *तेरे हाकिम हठिले और चोरों से मिले हैं। वे सब के सब घूस खानेवाले और भेंट के लालची हैं। वे अनाथ का न्याय नही करते, और न विधवा का मुकद्दमा अपने पास आने देते हैं। इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है: सुनों मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शांति पाऊंगा और अपने बैरियों से पलटा लूंगा।* **निर्गमन २३:८** *घूस न लेना, क्योंकि घूस देखने वालों को भी अंधा कर देता है धर्मियों की बातें पलट देता है।* **व्य. वि. १६:१९** *तुम न्याय न बिगाडना, तू न तो पक्षपात करना और न तो घूस लेना, क्योंकि घूस बुद्धिमान की आंखें अंधी कर देती है और धर्मियों की बातें पलट देती है।* **नीतिवचन १७:२३** *दुष्ट जन न्याय बिगाडने के लिए अपनी गांठ से घूस निकालता है।* **यहेजकेल २२:१२-१३** *तुझ में हत्या करने के लिए उन्हों ने घूस ली है, तू ने ब्याज और सूद लिया और अपने पडोसीयों को पीस पीसकर अन्याय से लाभ उठाया, और मुझ को तू ने भूला दिया, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। सो देख, जो लाभ तू ने अन्याय से उठाया और अपने बीच हत्या की है उस से मैं ने हाथ पर हाथ दे मारा है।* **दानिय्येल ६:३-४** *जब देखा गया की दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उस को उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली, वरन राजा यह भी सोचता था कि उस को सारे राज्य के उपर ठहराए। तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरूद्व दोष ढूंढने लगे, परंतु वह विश्वासयोग्य था, और उसके कार्य में कोई भूल वरदान दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध वा दोष न पा सके।*

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
२८- आलसी	मेहनती

नीतिवचन १०:४ *जो काम में ढिलाई करता है वह निर्धन हो जाता है, परंतु कामकाजू लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।* **नीतिवचन १०:५** *जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करने वाला है, परंतु जो बंटा कटनी के समय भारी नींद में पडा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।* **नीतिवचन २६:१३-१६** *आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह है, चौक में सिंह है। जैसे किवाड अपनी चूल पर घूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है। आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है परंतु आलस्य के कारण कौर मुंह तक नही उठाता।* **नीतिवचन १३:४** *आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसे कुछ नही मिलता, परंतु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।* **२ थिस्स. ३:१०-१३** *और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए। हम सुनते है कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नही करते, पर औरों के काम में हाथ डाला करते हैं। ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते हैं और समझाते हैं, कि चुपचाप काम कर के अपनी ही रोटी खाया करें। और तुम, हे भाइयों, भलाई करने में हियाव पवित्र आत्मा छोडो।* **नीतिवचन १२:२७** *आलसी अहेर का पीछा नही करता, परंतु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।* **सभो. १०:१६-१९** *हे देश, तू धन्य है जब तेरा राजा कुलीन, और तेरे हाकिम समय पर भोज करते हैं, और वह भी मातवाले होने को नही वरन बल बढाने के लिए! आलस्य के कारण छत की कडियां दब जाती है, औश्र हाथों की सुस्ती से घर चूता है।* **नीतिवचन १२:२४** *कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परंतु आलसी बगारी में पकडे जाते हैं।* **नीतिवचन १३:४** *आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसे कुछ नही मिलता, परंतु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।* **नीतिवचन २१:५** *कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परंतु उतावली करने वाले को केवल घटी होती है।* **नीतिवचन ६:६-११** *हे आलसी, चूंटियों के पास जा, उन के काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो। उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, न प्रभुता करने वाला, तौभी वह अपना आहार धूनकाल में संचय करती है और कटनी के समय अपनी भोजन वस्तुएं बटोरती हैं। हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी? कुछ और सो लेना, थोडी सी नींद, एक और झपकी, थोडा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन बटमार की नाई और मेरी घटी हथियार बंद के समान आराधना पडेगी।*

२९- चोरी करना	भरपाई करना

निर्गमन २०:१५ *तू चोरी न करना।* **लैव्य. १९:११** *तुम चोरी न करना, और एक दूसरे से पवित्र आत्मा कपट करना और न झूठ बोलना।* **व्य. वि. ५:१९** *तू चोरी न करना* **नीतिवचन ३०:८-९** *व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख, मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना, प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इंकार कर के कहूं कि यहोवा कौन है? वा अपना भाग खोकर चोरी करूं और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं।* **रोमियों २:२१,२२,२४** *सो क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आप को नही सिखाता। क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, क्या आप ही चोरी करता है? तू जो कहता है, व्यभिचार न करना, क्या आप ही व्यभिचार करता है?...क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाति है, जैसा लिखा है।* **गिनती ५:६-११** *जब कोई पुरुष वा स्त्री कोई ऐसा पाप करके जो लोग किया करते हैं, यहोवा से विश्वासघात करे, और वह प्राणी दोषी हो, तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले और पूरे मूल में पांच अंश बढाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे, जिस के विषय दोषी हुआ हो।* **निर्गमन २२:१** *यदि कोई मनुष्य बैल, वा भेड, वा बकरी चुराकर उस का घात करे वा बेच डाले, तो वह बैल की संती पांच बैल, और भेड-बकरी की संती चार भेड-बकरी भर दे।* **निर्गमन २२:९** *चाहे बैल, चाहे गदहे, चाहे भेड वा बकरी, चाहे वस्त्र, चाहे किसी प्रकार की खोई हुई वस्तु के विषय अपराध क्यों न लगाया जाए, जिसे दो जन अपनी अपनी कहते हों, जो दोनो का मुकद्दमा परमेश्वर के पास आए और जिस को परमेश्वर दोषी ठहराए वह दूसरे को दूना भर दे।* **इफि. ४:२८** *चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे। इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उस के पास कछ हो।* **भरपाई के विषय में अतिरिक्त पदों के लिए निर्गमन २२:१२-१५, लैव्य. ६:३-५ देखें।**

मनुष्यों के मार्ग	परमेश्वर का मार्ग
३०- काम में लगे रहना	विश्राम और नविनीकरण

भजन १२७:२ *तुम जो सवेरे उठते और देर करके विश्राम करते और दुख भरी रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिए व्यर्थ है, क्योंकि वह अपने प्रियों को यूंही नींद प्रदान करता है।* **निर्गमन २०:११** *छः दिन यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया, इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उस को पवित्र ठहराया।* **लैव्य. २३:३** *छः दिन कामकाज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्राम का और पवित्र सभा का दिन है, उस में किसी प्रकार का कामकाज न किया जाएः वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्राम दिन ठहरे।* **निर्गमन १६:२३** *यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परमविश्राम, अर्थात यहोवा के लिए परमविश्राम होगा।* **निर्गमन १६:२३-३०** *इसलिए जो तुम्हें तंदूर में पकाना हो उसे पकाओं, और जो सिझाना हो उसे सिझाओं, और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिए रख छोडो। जब उन्हो ने मूसा की इस आज्ञा के अनुसार तक रख छोडा, तब न तो वह बसाया और न उस में किडे पडे। तब मूसा ने कहा, आज उसी को खाओं क्योंकि आज यहोवा का विश्राम दिन है, इसलिए आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा। छः दिन तो तुम उसे बटोरा कारेगे, परंतु सातवां दिन तो विश्राम दिन है, उस में वह न मिलेगा। तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन भी बटोरने को बाहर आए, परंतु उन को कुछ न मिला। तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नही मानोगे? देखो, यहोवा ने तुम को विश्राम का दिन दिया है, इस कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है, इसलिए तुम अपने अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना। लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।* **व्य. वि. ५:१२-१५** *तू विश्राम दिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है। छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा कामकाज करना, परंतु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्राम दिन है, उस में तू किसी भांति का कामकाज न करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो, जिस में तेरा दास और तेरी दासी भी तेररी नाईं विश्राम करें।* **इब्रनियों ४:९-११** *परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है। क्योंकि जिस ने उस के विश्राम में प्रवेश किया है, उस ने भी परमेश्वर की नाईं अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है। ससो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो कि कोई जन उन की नाईं आज्ञा न मानकर गिर पडे।* **निर्गमन २३:१०-११** *छः वर्ष तो अपनी भूमि में बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना, परंतु सातवें वर्ष में उसको पडती रहने देना रहने देना और वैसा ही छोड देना, तो तेरे भाई बंधुओं में के दरिद्र लोगों उस से खाने पाएं, और जो कुछ उन मे से बचे, वह बनैले पशुओं के खाने के काम आए। और अपनी दाख और जलपाई की बारियों को भी ऐसे ही करना।* **लैव्य. २५:३-७** *छः वर्ष तो अपना अपना खेत बोया करना और छहों वर्ष अपनी अपनी दाख की बारी छांट छांटकर देश की उपज इकट्ठी किया करना, परंतु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिए परमविश्रामकाल मिले, उस में न तो अपना खेत बोना, और न अपनी दाख की बारी छांटना। जो कुछ कटे हुए खेत में अपने आप से उगे उसे न काटना, और अपनी बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को न तोडना, क्योंकि वह भूमि के लिए परमविश्राम का वर्ष होगा। और भूमि के विश्रामकाल ही की उपज से तुम को, और तुम्हारे दास दासी को, और तुम्हारे साथ रहने वाले मजदूरों और परदेशीयों को भी भोजन मिलेगा। और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उनका भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा।* **लैव्य. २५:१८-२२** *तुम मेरी विधियों को मानना और मेरे नियमों पर समझ बूझ कर चलना, क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे। और यदि तुम कहो कि सातवें वर्ष में हम क्या खाएंगे, न तो हम बोएंगे न अपने खेत में उपज इकट्ठी करेगें? तो जानो की मैं तुम को मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसर आशीष दूंगा कि भूमि की उपज तीन वर्ष मे काम आएगी। तुम आठवें वर्ष में बोओगे, और पुरानी उपज में से खाते रहोगे, और नवे वर्ष की उपज जब तक न मिले तब तक पुरानी उपज में से खाते रहोगे।* **नहेमायाह १०:३१** *सातवें वर्ष में भूमि पडी रहने देंगे, और अपने ऋण की वसूली छोड देंगे।*

ब्राइन क्लुथ की जीवनी

ब्राइन क्लुथ अमरीका में और अन्य देशों में सभाओं, कलीसियाओं, कान्फ्रेंसों में बहुत प्रचलित वक्ता हैं। उन्होने २६ से अधिक देशों में अपनी सेवा यात्रा की है जिस में भारत भी शामिल है।

कई पत्रीकाओं, समाचार पत्रों और रेडियो ने उन से मसीही दान और कलीसिया में आर्थिक शिक्षा के विषय पर साक्षात्कार भी किएं हैं। ब्राइन लैरी बरकट की रेडियो सेवकाई में मेहमान प्रवक्ता है जो १००० रेडियो स्टेशनों से प्रसारीत की जाती है।

उनके मसीही उदारता पर लिखे गए लेख अमरीका और १०० से अधिक देशों में ३५०,००० मसीही अगुवों के बीच में वितरीत किए गए हैं।

रेव्ह. ब्राइन क्लुथ First Evangelical Free Church of Colorado Springs के प्रमुख पास्टर हैं और Christian Stewardship Association के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं। इस संस्था ने ५० कलीसियाओं और १०,००० सेवकाईयों के बीच सेवा की और अमरीका में National Association of Evangelicals का प्रशिक्षण देने वाला अंग है।

ब्राइन और उन की पत्नी सैन्डी के तीन बच्चे हैं जिस में उन की भारत से गोद ली गई पुत्री भी शामिल है।

वह कोलोराडो में कोलोराडो स्प्रिंगस नामक शहर में रहते हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करेः

Brian Kluth - c/o First Evangelical Free Church - 820 N. 30th Street - Colorado Springs, CO - 80904

Ph: 719-930-4000 Fax: 719-634-7933 Email: Brian@kluth.org

भारत में संपर्क के लिएः

रेव्ह. जोनाथन सिंह

ए-१५ आचार्य निकेतन, मयूर विहार फेस-१, दिल्ली - ११००९१

फोनः ०११-२२७५ ७६२४ **e-mail: jsingh33@msn.com**

आर्थिक मुद्दों पर बायबल के पद

"तेरा वचन मेरे पांव के दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजाला है..." भजन सहिंता ११९:१०५

उत्तरदायीत्व

- दानिएल ६:१-३
- मत्ती १८:२३
- मत्ती २५:१४-३०
- रोमियों १४:१२

गरीबो की सहायता करना

- भजन ६९:३३
- भजन ७२:१२-१४
- भजन १०९:३१
- नीतिवचन १४:२१
- नीतिवचन १४:२१
- मत्ती ५:४२
- मत्ती ६:१९-२०
- मत्ती १०:४२
- लूका ३:११
- लूका ९:४८
- लूका १०:३५
- लूका १२:३३
- लूका १९:८-९
- १ तीमु. ५:३,५,८,१६

दरिद्रों का शोक्षण

- व्य. वि. २४:१४
- भजन १०:२
- भजन १२:५
- नीतिवचन १४:२०,२१,३१
- नीतिवचन २१:१३
- नीतिवचन २२:१६
- नीतिवचन २४:२३
- नीतिवचन २८:८
- मत्ती १८:२३-३४
- लूका ११:४२
- लूका १६:१९-२५

धनवानों की ओर झुकाव

- व्य. वि. १:१७
- व्य. वि. १६:१९
- नीतिवचन १४:२०
- नीतिवचन २९:२१
- रोमियों १२:१६

आय-व्यय का लेखा और योजना

- नीतिवचन १६:९
- नीतिवचन १९:२१
- नीतिवचन २२:३
- नीतिवचन २४:३,४
- नीतिवचन २७:१७
- लूका १२:१६-२१
- लूका १४:२८-३०
- लूका १६:१-८
- १ कुरिन्थियों १६:१-२

व्यपार के व्यवहार और कार्य

- लैव्य. १९:१२
- भजन ११२
- नीतिवचन १०:४
- नीतिवचन १३:४
- नीतिवचन १३:११
- नीतिवचन २४:१०
- नीतिवचन २८:२७
- सभो. ५:१२
- मलाकी ३:५
- लूका ६:३५ङ
- रोमियों १२:११
- इफसियों ४:२८

इमानदारी बनाम नीच कमाई

- व्य. वि. २५:१५
- नीतिवचन ११:१
- नीतिवचन १६:८
- नीतिवचन २२:१६
- नीतिवचन २८:८
- यिर्म. २२:१३
- लूका १६:१०
- रोमियों १२:१७

संतुष्टि

- यहोशु ७:७
- नीतिवचन ३०:७-९
- सभो. ५:१०
- सभो. ५:१५-२०
- लूका ३:१४
- लूका १२:१५-२१
- २ कुरिन्थियों ६:१०
- फिल. ४:११-१२
- १ तीमु. ६:६-१०
- इब्रानीयों १३:५

सह-हस्ताक्षर

- नीतिवचन ६:१-५
- नीतिवचन ११:१५
- नीतिवचन १७:१८
- नीतिवचन २०:१६
- नीतिवचन २२:२६
- नीतिवचन २७:१३

लालच

- भजन ७३:२-३
- भजन ७३:१३, १७, २०
- नीतिवचन २३:४-५
- सभो. ५:१०
- लूका १२:१५
- लूका १८:१०-१४
- लूका १८:२४
- इफसियों ५:५
- याकूब ४:१३

ऋण, उधार लेना

- व्य. वि. १५:६
- व्य. वि. २८:१२-१३
- २ राजा ४:१
- भजन ३७:२१
- नीतिवचन ३:२७-२८
- नीतिवचन ६:१-३
- नीतिवचन ११:१५
- नीतिवचन १७:१८
- नीतिवचन २२:७
- नीतिवचन २७:१३
- मत्ती ५:२५-२६
- मत्ती १८:२३
- लूका १२:५८-५९
- रोमियों १३:८

अनुशासन और धौर्य

- मत्ती ७:१३:१४
- लूका ९:५१
- २ कुरिन्थियों ८:११
- २ थिस्स. ३:११
- इब्रानीयों १२:११

बेइमानी

- भजन ३७:३७
- भजन ६२:१०-१२
- नीतिवचन १०:१५-१६
- नीतिवचन ११:१६,१८
- नीतिवचन १२:३,१२
- नीतिवचन १३:७
- नीतिवचन १५:२७
- नीतिवचन २०:२१
- नीतिवचन २२:२८
- नीतिवचन २४:१९-२०
- नीतिवचन २८:२२
- मत्ती१८:७
- मत्ती २७:५
- लूका ९:२५
- लूका ११:४२
- लूका १६:१,११:१३
- लूका २०:४६-४७
- रोमियों २:२१-२२

वास्तविकता का पता लगाना और ज्ञान

- नीतिवचन १४:८, १५
- नीतिवचन १८:१३
- नीतिवचन १९:२
- नीतिवचन २३:२३
- नीतिवचन २७:२३-२४
- लूका १४:३१:३२
- याकूब १:५

बटोरना और स्वार्थ

- भजन ४९:११
- भजन ४९:१६-१७
- नीतिवचन १३:२२
- मलाकी १:७,९
- मलाकी ३:८
- मत्ती ६:२४
- मत्ती १९:१३
- लूका १६:१६-२०
- लूका १२:२१,३३

इमानदारी और सच्चापन

- भजन १:१-२
- भजन ३७:३७
- भजन ११२:६
- नीतिवचन १०:१६
- नीतिवचन ११:४
- नीतिवचन १२:१२
- नीतिवचन १३:२२
- नीतिवचन १६:८,११
- नीतिवचन १९:१
- नीतिवचन २१:३
- नीतिवचन २२:३
- नीतिवचन २८:६,१३
- मत्ती ७:२०
- मत्ती १७:२४
- लूका ३:१२-१४
- लूका ८:१५
- लूका १२:५८
- लूका २०:२२-२५
- रोमियों १३:७
- रोमियों १३:९
- गलतीयों ६:९

नम्रता

- नीतिवचन २२:४
- सभो. ६:७-८
- यिर्म.९:२४
- मत्ती ६:१-३
- लूका १७:३
- लूका १९:८
- कुरिन्थियों १:२६, ३१

कठिन परिश्रम और यत्न करना

- नीतिवचन ६:४
- नीतिवचन १२:११
- नीतिवचन १२:२४
- नीतिवचन १३:११
- नीतिवचन १४:४
- नीतिवचन २१:५
- नीतिवचन २४:३-४
- मत्ती २०:१३
- रोमियों १२:११
- १ थिस्स. ४:११

उत्तराधिकार और भू संपत्ति की देखभाल

- ❑ नीतिवचन १३:२२
- ❑ नीतिवचन १७:२
- ❑ नीतिवचन २०:२१
- ❑ सभो. २:१८-१९
- ❑ यहेज. २६:१६-१८
- ❑ लूका १५:११-३१
- ❑ २ शमु. ७:२३
- ❑ २ राजा २०:१

पूंजि निवेश

- ❑ नीतिवचन २१:२०
- ❑ नीतिवचन २४:२७
- ❑ सभो. ६:३
- ❑ मत्ती ६:१९-२१
- ❑ मत्ती १३:२२
- ❑ मत्ती २४:३५
- ❑ मत्ती २५:१४-३०
- ❑ मत्ती २५:४५
- ❑ लूका १४:२८-२९
- ❑ लूका १९:१३-२६
- ❑ २ तीमु. २:४
- ❑ २ पतरस २:२०
- ❑ २पतरस ३:१०

आलस्य

- ❑ नीतिवचन ६:६-११
- ❑ नीतिवचन १२:२४
- ❑ नीतिवचन १३:११
- ❑ नीतिवचन १४:४
- ❑ नीतिवचन १८:९
- ❑ नीतिवचन २१:१७
- ❑ नीतिवचन २४:३०-३१
- ❑ सभो. १०:१८
- ❑ २ थिस्स. ३:६
- ❑ २ थिस्स. ३:१०-११

अकाल

- ❑ भजन ३३:१८-१९
- ❑ भजन ३७:१८-१९
- ❑ रोमियों ८:३५
- ❑ उत्पत्ती १२:१०
- ❑ उत्पत्ती २६:१
- ❑ उत्पत्ती ४१:२९,३०,५०
- ❑ उत्पत्ती ५२:५
- ❑ रुत १:१-४
- ❑ २ शमु. २१:१
- ❑ १ राजा १८:२
- ❑ २ राजा ४:३८
- ❑ नहे. ५:३
- ❑ यिर्म. ५२:६
- ❑ प्रेरितों के काम ११:२८

दरिद्रता का भय

- ❑ भजन ३७:३५
- ❑ मत्ती ६:८
- ❑ मत्ती ६:२५-३३
- ❑ फिल. ४:१९

परमेश्वर की सहायता और प्रबंध

- ❑ उत्पत्ती ३९:३
- ❑ व्य. वि. २८:११
- ❑ व्य. वि. २९:९
- ❑ १ इति. ४:९-१०
- ❑ २ इति. १६:९
- ❑ २ इति. ३१:२१
- ❑ भजन १:३
- ❑ भजन ३५:२७
- ❑ नीतिवचन १०:२२
- ❑ नीतिवचन २८:१३
- ❑ यिर्म. १७:८-१०
- ❑ लूका ६:३८
- ❑ यूहन्ना १०:१०
- ❑ २ कुरिन्थियों ८:९
- ❑ फिल. ४:१९
- ❑ ३ यूहन्ना २

पैसे का प्रेम

- ❑ सभो. ५:१०
- ❑ लूका १६:१३-१४
- ❑ १ तीमु. ३:३
- ❑ १ तीमु. ६:१०
- ❑ २ तीमु. ३:२
- ❑ इब्रानीयों १३:५
- ❑ १ पतरस ५:२

बुद्धिमानी

- ❑ भजन ११२:५
- ❑ नीतिवचन ८:१२
- ❑ नीतिवचन १२:१६,२३
- ❑ नीतिवचन १३:१६
- ❑ नीतिवचन१४:८,१५,१६
- ❑ नीतिवचन १५:५
- ❑ नीतिवचन १६:२१
- ❑ नीतिवचन १८:१५
- ❑ नीतिवचन २२:३
- ❑ नीतिवचन २७:१२
- ❑ होशे १४:९
- ❑ आमोस ५:१३

बचत

- ❑ उत्पत्ती ४१:३३-३६
- ❑ नीतिवचन ६:६-८
- ❑ नीतिवचन २१:२०
- ❑ नीतिवचन ३०:२४-२५

ब्राइन क्लुथ द्वारा तैयार किया गया।

मुख्य उद्गम अज्ञात।

(www.kluth.org)

Sony/1ks/2 pages of financial references and verses.doc

सहायक स्रोत

क्राउन की १२ सप्ताह के लिए आर्थिक बायबल अध्ययन: यदि अभी आप ने अभी तक क्राउन के १२ सप्ताह के लिए आर्थिक बायबल अध्ययन को नही किया है तो आप इस कलीसिया के साथ इस अध्ध्यन को कर सकते हैं। यदि आप इस क्षेत्र से बहुत दूर रहते हैं तो कृपया अन्य कलीसियाओं के बारे में जानकारी के लिए क्राउन की डालास-फोर्ट वर्थ टीम से संपर्क करें (www.cromnfw.org)*

क्राऊन आर्थिक सेवकाई (www.crown.org): क्राऊन अच्छे वेबसाईट स्रोत, लेख, आर्थिक गणना (उन की वेबसाईट पर) पुस्तके, छोटे समूह में बायबल की आर्थिक शिक्षाएं, रेडियों कार्यक्रम और आर्थिक सलाहकार प्रस्तुत करता है।

रोनाल्ड ब्लू एंड कम्पनी (www.ronblue.com): इस संस्था के १७ शहरों में कार्यालय हैं और वे आर्थिक सलाह, निवेश प्रबंध, भू संपत्ति की योजना, कर सेवा, दान देने में सलाह आदि कार्य करते हैं। यह अधिक लाभ कमानेवाले व्यक्तियों को सलाह देने में निपुण हैं।

साऊंड माईंड इनवेस्टमेंट (www.soundmindinvesting.com): यह ऑस्टिन प्रयोर का आज के मसीही परिवार के लिए पत्र है जो निवेश के लिए उचित सलाह देता है। ऑस्टिन प्रयोर लोगों को निम्नलिखित वेब लेख ''आने वाले वर्ष के १२ महिनों के लिए आर्थिक योजना'' पढने की सलाह देतें हैं। (http://news.morningstar.com/doc/article/0,1,11608,00.html)

ब्राइन क्लुथ की वेबसाईट (www.kluth.org): बायबल के आधार पर दान देना, ऋण घटाना और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे विषयों पर प्रभावशाली लेख।

जेनेरस गिविंग (www.Generousgiving.org): उन लोगों के लिए स्रोत और कार्यशाला जो बायबल के आधार पर दान देने के अपने समर्पण में और गहराई में जाना चाहते हैं ताकि परमेश्वर के राज्य का विकास हो।

कंज्यूमर क्रेडिट काऊंसलिंग ऐजंसी (www.cccs.net) क्रेडिट कार्ड और ऋण जैसी समस्याओं पर सलाह।